तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना के बड़ेबाबा

श्री वृषभनाथ

दीप अर्चना/ऋद्धि विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

अनेकान्त ग्रन्थमाला का ५१वाँ पुष्प

कृति	:	श्री वृषभनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज मुनिश्री सरलसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
सहयोग	:	बा॰ ब्र॰ संदीप भैयाजी, सरल
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान	:	अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान श्रुतधाम बीना, सागर (म.प्र.) मोबाइल- 7440727214
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

१. स्व. श्री विमलकुमार जी सराफ की स्मृति में श्रीमती द्रोपतीबाई, महेन्द्रकुमार-प्रमिला, प्रमोदकुमार-मंजू सराफ परिवार बीना

२. स्व. श्री भैयालालजी जैन की स्मृति में श्रीमती पुष्पाबाई, राकेशकुमार-अनीता, अर्पित-अंकिता, देविक, विजय ट्रांसपोर्ट परिवार बीना (देविक के प्रथम जन्मदिन के उपलक्ष में)

३. श्री अरुणप्रकाश-श्रीमती विजय, नितिन, नेहा समस्त बुखारिया परिवार बीना

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए श्रुतधाम तीर्थ के संस्थापक बा. ब्र. संदीप भैया जी 'सरल' के निवेदन पर आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत कृति '**श्रुतधाम के बड़ेबाबा श्री वृषभनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान**' के रचयिता अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने करके महान् उपकार किया है। इस विधान के माध्यम से प्रथम तीर्थंकर श्री वृषभनाथ भगवान की भक्ति एवं श्रुतधाम तीर्थ वंदना के साथ-साथ तत्त्व स्वाध्याय भी होगा।

यह कृति उन श्रावकों के लिए भी सहायक होगी जो पूजा तो करना चाहते हैं परन्तु पूजन के क्रम आदि की जानकारी के अभाव में वे संकोच करके रह जाते हैं तथा यह कृति श्रावक के षडावश्यक कर्तव्य में प्रथम कर्तव्य को पूर्ण करने में सहयोगी भी रहेगी। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा० ब्र० संजय, मुरैना

अनेकान्त ज्ञान मंदिर श्रुतधाम तीर्थ बीना
एक परिचय

बुन्देलखण्ड की पावन प्रसूता वसुन्धरा बीना (सागर) म.प्र. में २० फरवरी १९९२ को संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनि श्री १०८ सरलसागर जी महाराज के पुनीत सान्निध्य में बाल ब्र. श्री संदीप जी (सरल) के भागीरथी प्रयासों से इस संस्थान का शुभारंभ किया गया है। यह संस्थान जैनागम एवं जैन संस्कृति की अमूल्य धरोहर के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन व प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है अपने इष्ट उद्देश्यों को मूर्तरूप देने हेतु रचनात्मक कार्यों में जुटा हुआ है। संस्थान को अभ्युदय उत्थान में परम पूज्य आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज सहित समस्त आचार्यों एवं मुनिराजों का आशीर्वाद मिल रहा है।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान के उद्देश्य-

१. जैन दर्शन/धर्म/संस्कृति/साहित्य विषयक प्राचीन हस्तलिखित प्रकाशित/अप्रकाशित ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों का अन्वेषण, एकत्रीकरण, सूचीकरण एवं वैज्ञानिक तरीके से संरक्षित करना।
२. अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करवाना।
३. जैन विद्याओं के अध्येताओं व शोधार्थियों को शोध अध्ययन एवं मुनिसंघों के पठन पाठन हेतु जैनागम साहित्य सुलभ कराना व अन्य आवश्यक संसाधन जुटाना।
४. सेवानिवृत्त प्रज्ञापुरुषों एवं त्यागीवृन्दों के लिए स्वाध्याय शोधाध्ययन, सात्विक चर्या के साथ उन्हें संयमाचरण का

मार्ग प्रशस्त करने हेतु अनेकान्त प्रज्ञाश्रम/समाधि साधना केन्द्र के अन्तर्गत समस्त सुविधाओं के साधन जुटाना।

संस्था द्वारा संचालित गतिविधियाँ

(१) **श्री आदिनाथ जिनालय**- श्रुतधाम के प्रशस्त सुरम्य वातावरण में आगमोक्त, वास्तुशास्त्र के अनुकूल, प्राचीन, दाक्षिण्य शैली में श्री आदिनाथ जिनालय का निर्माण किया गया है। इस जिनालय में मूलनायक श्री १००८ देवाधिदेव आदिनाथ तीर्थंकर की विशालकाय मनोरम, अतिशयकारी प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में कमलासन पर विराजमान है। एक बार दर्शन करते ही दर्शकगण बार-बार यहाँ आने के लिए लालायित रहते हैं।

(२) **व्रती आहारशाला का शुभारंभ**- अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना के अन्तर्गत श्रुतधाम परिसर में संचालित अनेकान्त प्रज्ञाश्रम के अन्तर्गत व्रती आहार शाला चल रही हैं। इस आहार शाला में प्रतिमाधारी व्रती वर्ग, ब्रह्मचारी वर्ग एवं शुद्ध भोजन करने वाले श्रुतप्रेमी अतिथिजनों को सदैव आहार व्यवस्था उपलब्ध रहती है।

(३) **पाण्डुलिपियों का संग्रहण**- अनेक असुरक्षित स्थलों से प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों को 'शास्त्रोद्धार शास्त्रसुरक्षा अभियान' के अन्तर्गत संकलन का कार्य द्रुत गति से चल रहा है। १५ प्रान्तों के लगभग ६०० स्थलों से २५००० हस्तलिखित ग्रन्थों का संकलन करके सूचीकरण का कार्य किया जा चुका है।

(४) **पाण्डुलिपियों का कम्प्यूटराइजेशन**– शास्त्र भण्डार के सभी हजारों ग्रन्थों को सूचीबद्ध तथा उल्लेखनीय विशिष्ट शास्त्रों को सी. डी. बनाने के कार्य हेतु संस्थान संलग्न है।

(५) **शोध ग्रंथालय**– इसमें अद्यतन धर्म, सिद्धान्त, अध्यात्म, न्याय, व्याकरण, पुराण, बाल साहित्य और दार्शनिक विषयों से संबंधित लगभग १५००० से भी अधिक ग्रन्थों का संकलन किया जा चुका है।

(६) **अनेकान्त दर्पण त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशन** – अनेकान्त ज्ञान मंदिर की गतिविधियों एवं शोधपरक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्था द्वारा शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका की सदस्यता–११०१/– रुपये।

(७) **अनेकान्त ग्रन्थमाला**– इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत अप्रकाशित एवं लगभग ५० महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है।

(८) **तीर्थंकर महावीर मुक्ताकाश समवसरण मंदिर निर्माणरत् एवं संस्था में आपका सहयोग हमें निम्न प्रकार से मिल सकता है–**

१.	**परम शिरोमणि संरक्षक सदस्य**	**५१००१/–**
२.	**शिरोमणि सदस्य**	**३१००१/–**
३.	**परम संरक्षक सदस्य**	**१५००१/–**
४.	**संरक्षक सदस्य**	**११११०१/–**
५.	**जिनवाणी सदस्य**	**५००१/–**

उपरोक्त राशि जिनवाणी फण्ड में रहेगी। इस राशि से ग्रंथों का प्रकाशन होता है। सभी प्रकाशित ग्रंथ दान स्वरूप प्रदान किये जाते हैं।

६. **व्रती आहार व्यवस्था संरक्षक सदस्य**- ११०००/-
यह राशि फण्ड में रहेगी। आजीवन आपके परिवार द्वारा वर्ष में एक बार व्रती शाला में आहार दिया जाता है।

७. **व्रती आहार व्यवस्था सदस्य**- ५००१/-
यह राशि फण्ड में रहेगी। ५ वर्ष तक आपके परिवार द्वारा वर्ष में एक दिन व्रती शाला में आहार दिया जायेगा।

८. **अलमारी हेतु** ६०००/-
ग्रंथों के रखरखाव हेतु ग्रन्थ भंडार में अलमारी रखी जावेगी।

९. **वृक्षारोपण हेतु**- १००१/-

१०. **एक ग्रंथ का संरक्षण**- १००१/-

अनेकान्त ग्रन्थमाल में प्रकाशित साहित्य

१-२) अनेकांत भवन ग्रन्थ रत्नावली भाग १-२, ३
३-५) समयसार खण्ड १,२,३ (पं. मोतीचन्द्र कोठारी टीका)
६) नियमसार (पं. पन्नालाल जी टीका)
७) आलाप पद्धति (आ. देवसेन)
८) परीक्षामुख (प्रश्न और उत्तर टीका)
९) प्रमाण निर्णय (आ. वादिराज जी)
१०) आध्यात्मिक सोपान (ब्र. शीतल प्रसाद जी)
११) सरल प्राकृत प्रवेश (ब्र. संदीप 'सरल')
१२) सरल नय प्रवेशिका (ब्र. संदीप 'सरल')
१३) जैन न्याय दर्शन प्रवेशिका (ब्र. संदीप 'सरल')

१४) जिनागम प्रवेश हिन्दी (ब्र. संदीप 'सरल')
१५-१९) जिनागम प्रवेश (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ एवं तमिल भाषा में)
२०) अमृतवाणी (मुनि श्री अनंतानंद सागर जी)
२१-२८) घर घर चर्चा रहे ज्ञान की भाग १ से ८ (ब्र. संदीप 'सरल')
२९) जिनागमसार प्रथम खण्ड (ब्र. संदीप 'सरल')
३०) आत्मा की ४७ शक्तियाँ एवं ४७ नय (ब्र. संदीप 'सरल')
३१) संस्कार शाला भाग एक (ब्र. संदीप 'सरल')
३२) जैनदर्शन में गुणस्थान चिंतन (डॉ. सूरजमुखी जैन)
३३) अनेकांत काव्य सहस्री (पं. लालचंद राकेश)
३४) नाम-मालादि शब्दकोश (धनंजय कवि)
३५) ग्रन्थचतुष्टयी (तत्त्वसार, ज्ञानसार, दर्शनसार, आराधनासार)
३६) अष्टपाहुड
३७) चेतना (भजन एवं कविता संग्रह) कैलाश रवि
३८) ब्रह्मचर्य साधना रहस्य (संकलन क्षु. देवानंद जी)
३९) आप्तमीमांसा वृत्ति (आ. वसुनंदी)
४०) सरल करणानुयोग प्रवेश (ब्र. संदीप 'सरल')
४१) तत्त्वसार
४२) प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
४३) त्रिवेणी (ब्र. संजय भैया पठारी)
४४) दशलक्षण धर्म प्रवचन
४५) आप्तमीमांसा विवेचन (पं. मूलचंदजी)
४६) अध्यात्म सूत्र
४७) सम्यग्ज्ञान स्व-पर भेदविज्ञान
४८) आप्तमीमांसा सरल प्रश्नोत्तरी (ब्र. संदीप 'सरल')

अक्षय असीम भक्तामर मण्डल विधान एवं शांतिधारा

जैनदर्शन के भक्तिमार्ग में **भक्तामर स्तोत्र** का सर्वोच्च स्थान है। प्रभु भक्ति ही जीवन में उल्लास, उमंग, वात्सल्य, धैर्य, श्रद्धा और विवेक गुणों को प्रगट करती है। श्रावक धर्म में पूजन विधि के अन्तर्गत **अभिषेक व शांतिधारा** का विशेष महत्व है। इससे पापों का प्रक्षालन होता है एवं पुयास्रव के साथ-साथ परिणामों में निर्मलता आती है।

श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर योजना प्रारम्भ की जा चुकी है। प्रतिदिन भक्तामर मण्डल विधान किया जा रहा है। भक्त से भगवान बनने के लिए भक्तामर मण्डल विधान एवं शांतिधारा श्री आदिनाथ जिनालय श्रुततीर्थ, श्रुतधाम बीना में आकर स्वयं करें अथवा अनुमोदना स्वरूप करवाकर पुण्यार्जक बनकर सातिशय पुण्य का संचय करें।

आप अपनी जन्मतिथि एवं अपने परिवार/परिजन की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, वैवाहिक वर्षगाँठ या किन्हीं अन्य विशेष अवसरों पर करवाकर सातिशय पुण्य अर्जित करें।

भक्तामर स्तोत्र ध्रौव्य फण्ड - ५१,५५१/- रुपये मात्र

शांतिधारा ध्रौव्य फण्ड - ११,१११/- रुपये मात्र

आहार निधि ध्रौव्य फण्ड - ११,१११/- रुपये मात्र

१. शांतिधारा और विधान वर्ष में एक बार जीवन पर्यंत तक चलता रहेगा।

२. विधानकर्त्ता पुण्यार्जक को शांतिधारा का अवसर भी प्राप्त होगा।

३. आहार निधि - यह राशि त्यागी व्रती, मुनिराजों के आहारदान में फण्ड में रहेगी।

४. यह राशि आप एकाधिक बार में भी जमा कर सकते हैं।

तिथि/दिनाँक में आरक्षण करने हेतु सम्पर्क सूत्र-

942593784, 9425135780, 8770194184, 7440727214

आप अपनी दान राशि की स्वीकृति अवश्य प्रदान करें अथवा अनेकान्त ज्ञान मंदिर एवं शोध संस्थान बीना के नाम से भारतीय स्टेट बैंक के IFSC-SBIN0001427 के एकाउन्ट नं. 10778899326 एवं पंजाब नेशनल बैंक के IFSC-PUBN0053200 के एकाउन्ट नं. 0532000100135488 में नगद राशि जमा करके फोन द्वारा हमारे कार्यालय में सूचित करें ताकि आपको रसीद भेजी जा सके। दान में दी गई राशि 80G के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

संस्था संस्थापक
ब्र. संदीप भैया 'सरल'

अध्यक्ष
प्रमोद सराफ
मो. 9425193784

मंत्री
प्रो. ए.पी. बुखारिया
मो. 9425135780

निवेदक
अनेकान्त ज्ञान मंदिर श्रुतधाम
खुरई रोड, बीना (म.प्र.) 470113
मोबा. नं.- 7440727214
email- shrutdham1992@gmail.com

दीप अर्चना हेतु इस प्रकार स्वस्तिक बनाकर प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक दीपक सजाते हुए 48 मंत्रों के साथ दीप अर्चना करना चाहिए।

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
1. मंगलाष्टक स्तोत्र	12
2. अभिषेकपाठ (संस्कृत)	15
3. अभिषेक स्तुति	20
4. अभिषेक गीत	21
5. वृहत्-शान्तिधारा	22
6. अभिषेक आरती	25
7. मंगल भावना	26
8. विनय पाठ	27
9. पूजन पीठिका	29
10. श्री नवदेवता पूजन	34
11. अर्घ्यावली	38
12. सिद्धभक्ति (प्राकृत)	45
13. श्री वृषभनाथ ऋद्धि विधान	46
14. महाऽर्घ्य-शान्तिपाठ-विसर्जन	63
15. आरती	66
16. जाकर आते है	66
17. श्रुतधाम चालीसा	67
18. नवीन निर्वाण काण्ड	71

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्-नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥1॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥2॥
नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥3॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,

सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥4॥
ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥5॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥6॥
सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥7॥
यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥8॥
इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगंधाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

[यहाँ जल से हाथ धोयें।]

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रक्षालनं करोमि।

अमृत स्नान (पात्र शुद्धि)

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चंदनमोषधीशं, शुभ्रं सुगंधाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोमि।

[१. शिखा, २. मस्तक, ३. ग्रीवा, ४. हृदय, ५. दोनों कान, ६. दोनों भुजाएँ, ७. दोनों कलाई, ८. नाभि, ९. पीठ इन नौ स्थानों पर तिलक करें]

अभिषेक पाठ
(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक/आपराह्निक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि। (पुष्प क्षेपण करें)

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।

वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्‌ध-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चंदन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चंदनादि-सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्‌गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशान्ति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... वीर निर्वाण ..... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चंदन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गंधोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–2, सब– रोज कराओ रे॥ प्रासुक...

1. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–2, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...

2. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–2, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...

3. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आए, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–2, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...

4. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–2, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...

5. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–2, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...

6. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–2, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....
जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आए शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....
श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....
जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....
हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तुम भी अपना फर्ज निभालो, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

वृहत्-शान्तिधारा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्वां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनन्तचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनन्त-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, बृहत्फणा-मण्डल-मण्डिताय ऋषि-आर्यिका श्रावक-श्राविका-प्रमुख-चतुःसंघोपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमंत्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मंत्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपमुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फुर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

1. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

2. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

3. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

4. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुए मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

5. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

6. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

7. अभिषेक आरती पूजाएँ, सौभाग्य पुण्य से मिल पाएँ।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पाएँ मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

===

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

===

नित्यपूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥1॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥3॥
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप ॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ॥6॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार ॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ॥8॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥9॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥10॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥11॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥13॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥15॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार ॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥22॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ॥23॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव ॥24॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ॥26॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥27॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते ॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥2॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ॥3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम् ॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥5॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं ॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥7॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्त्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक–चन्दन–तण्डुल–पुष्पकैश्, चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घ्यकैः।
धवल–मंगलगान–रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी–विरचित–तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक–चन्दन–तण्डुल–पुष्पकैश्, चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घ्यकैः।
धवल–मंगलगान–रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य–विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन–स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक–चन्दन–तण्डुल–पुष्पकैश्, चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घ्यकैः।
धवल–मंगलगान–रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून–नवकोटि–मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र–मभिवंद्य जगत्–त्रयेशं,
स्याद्वाद्–नायक–मनन्त–चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित–दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न–ललिताद्–भुत–वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच् छल–द्विमल–बोध–सुधा–प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभासकाय।

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 1॥
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 2॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 3॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 4॥
जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 5॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 6॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 8॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥9॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥10॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।

यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने ॥ 3 ॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति ॥ 4 ॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे ॥ 5 ॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें ॥ 6 ॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो ॥ 7 ॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी ॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फु हार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥

अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥

पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥

अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥1॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा ॥2॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ॥3॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे ॥4॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं ॥5॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं ॥6॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥7॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥8॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना के बड़ेबाबा
श्री वृषभनाथ जी दीप अर्चना/ ऋद्धि विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ।-४

(जोगीरासा)

१. बीना के श्रुतधाम तीर्थ के, वृषभनाथ जी स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, भगवन अंतर्यामी॥
पद्मासन के आदीश्वर जी, आदिब्रह्म जिनदेवा।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, स्वीकारो यह सेवा॥ ओम्...

२. वृषभनाथ पहले तीर्थंकर, जन्म अयोध्या नगरी।
इक्ष्वाकु कुल के श्री नंदन, पायी देह सुनहरी॥
नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नंदा।
वृषभ चिह्न पहचान आपकी, देते परमानंदा॥ ओम्...

३. भोगभूमि की हुई समाप्ति, कल्पवृक्ष जब खोए।
बेघर होकर प्राणी भटके, भूखे प्यासे रोए॥
आदिकाल के आदि प्रवर्तक, आदि ब्रह्म बन आए।
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य धर, धर्म ध्वजा फहराए॥ ओम्...

४. दिए अहिंसा परमो धर्मः, जीव मात्र को शिक्षा।
जियो और जीने दो सबको, है साँची जिन दीक्षा॥
करो अहिंसक कृषि गौपालन, या ऋषि बनना साँचा।
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग फिर वाँचा॥ ओम्...

५. सभी कलायें विद्यायें दीं, योग अंक अक्षर कीं।
मुक्तिवधू को पाने अपनी, बिटियों को साक्षर कीं॥

अष्टापद का सर्व सिद्धवर, कूट त्याग फिर स्वामी।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, मिले मुक्ति आगामी॥ ओम्...
६. जिसे प्राप्त करना परमातम, बहिरातम वह त्यागे।
अंतर आतम के साधन से, शुद्धातम में लागे॥
परमातम को पाने वो तो, मोक्षमार्ग अपनाए।
सो श्रुतधाम तीर्थ में आकर, वृषभनाथ को ध्याए॥ ओम्...
७. ये श्रुतधाम तीर्थ हम सबको, आत्मिक शांति प्रदाता।
मुक्त गगन की विद्या देगी, समवसरण सुख साता॥
एक बार कर तीर्थ वंदना, पाएँ धर्म सफलता।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सुव्रत धरो सरलता॥ ओम्...
८. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कणकण मंगल क्षणक्षण मंगल, जनजन मंगल होवे।
कर नमोऽस्तु श्रुतधाम तीर्थ को, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

===

आस्था व बोध
संयम की कृपा से
मंजिल पाते

श्री वृषभनाथ जी पूजन

स्थापना

(दोहा)

बीना के श्रुतधाम के, वृषभनाथ भगवान।
हम सब के आदर्श को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान ॥

(शंभू)

श्रुतधाम तीर्थ के हे ! जिनवर, श्री वृषभनाथ अंतर्यामी।
श्री नाभिराय मरुदेवी के, नंदन हम भक्तों के स्वामी॥
हे ! नाथ आपसे मिलने को, ये आमंत्रण भी लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

(दोहा)

आमंत्रण स्वीकार कर, हृदय पधारो नाथ।
आतम परमातम बने, हमें दीजिए साथ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ जिनेंद्र ! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

(पुष्पांजलिं...)

जब जन्म हुआ तो ज्ञान न था, फिर फँसी जवानी भोगों में।
तब धर्म ध्यान कैसे होगा, जब फँसा बुढ़ापा रोगों में॥
दुख चक्र मिटाने को हम तो, जल अर्पित करने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल की माया में फँसकर, बस विषय भोग ही याद रहे।
दिन रात इन्हीं की चिंता में, आतम परमातम भूल रहे॥

भव ताप मिटाने को हम तो, चंदन वंदन को लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

इसके कारण उसके कारण, हम बँधे पाप के बंधन से।
अब भटक रहे मारे मारे, सो मिल न सके निज भगवन् से॥
अब शरण आपकी पाने को, यह पुंज चढ़ाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को,श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूलों सा जीवन पाकर के, बस काँटों के व्यापार किए।
सो कामुकता ही हाथ लगी, कब अपना हम शृंगार किए॥
अब आतम कली खिलाने को, ये पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।

ना तृप्ति हुई पकवानों से, ना तृप्ति हुई रसपानों से।
सो लुटे पिटे भूखे प्यासे, हम मिल ना सके भगवानों से॥
अध्यात्म सरस चख पाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब पुण्य पाप की महिमा है, हम दोष दूसरों पर डालें।
परिणाम हुआ पथ भटक गए, शुद्धात्म हुए काले काले॥

अब ज्ञान ज्योति प्रकटाने को, यह दीप जलाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुनिया ने खूब जलाया पर, हम नहीं जले ना कर्म जले।
दुख दर्द वेदना तो भोगी पर, हो ना सके चेतन उजले॥
अब कर्म कलंक मिटाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप त्याग तपस्या करके हम, संतान संपदा सुख चाहें।
यदि प्राप्त हुए तो गर्व किए, यदि मिले न तो भरते आहें॥
हम पुण्यफला अरिहंता हों, सो फल अर्पण को लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम नाथ! आपके श्रद्धालु, बस भाव भक्ति से आते हैं।
बदले में कुछ भी चाह नहीं, फिर भी यह भाव बनाते हैं॥
प्रभु हृदय हमारे आप रहें, सो अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
श्री वृषभनाथ की पूजा को, श्रुतधाम तीर्थ हम आए हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पंच कल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, जिन से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

करें वंदना भाव से, आकर के श्रुतधाम।
प्रथम-प्रथम आदीश को, बारंबार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

भव्य जीव जो जिनशासन के, अनुयायी बन जाते हैं।
चौबीसी के श्रद्धालु वे, मोक्षमार्ग को पाते हैं॥
अनादि कालिक मिथ्यादर्शन, भव का भ्रमण नशाते हैं।
निज का रत्नत्रय प्रकटाकर, आत्मिक सुख वे पाते हैं॥१॥
ऐसे ही श्री वृषभनाथ जी, एक जीव संसारी थे।
लेकिन जिनशासन को पाकर, पाए मोक्ष सवारी थे॥
सुनते हैं वे वर्तमान में, मोक्ष महल में रहते हैं।
परम-परम अध्यात्म सुखों को, सचमुच! भोगा करते हैं॥२॥
जब चारित्र उन्हीं का समझा, तो मिलने मजबूर हुए।
उनके पथ पर चलने हम भी, उनके ही मजदूर हुए॥
जी हाँ! ये वो वृषभनाथ हैं, धर्म जिन्होंने दिया हमें।
जीवन की हर कला सिखाई, स्वर्ग मोक्ष पथ दिया हमें॥३॥
भारत देश विदेश विश्व में, सब पर तो उपकार किए।
तारण तरण जहाज बने वो, चरण शरण उपहार दिए॥
स्वार्थ नहीं कुछ आज हमारा, बस उपकार चुकाने को।
हम आए श्री वृषभनाथ को, सादर शीश झुकाने को॥४॥
शीश झुकाएं गीत सुनाएँ, करें अर्चना भली भली।
वृषभनाथ को पाकर अब हम, भटकेंगे ना गली गली॥
है विश्वास आप पर हमको, कभी हमें भी तारोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, भव से पार उतारोगे॥५॥

(दोहा)

जिनशासन की शान है, तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम।
अतः आत्म कल्याण को, दो निज में विश्राम॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलि...)

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

इन्द्री कर्म विजेता हैं, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी हैं, सुंदर अंतरयामी हैं।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के धारी हो, बाबा अतिशयकारी हो।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश रहे, देते आशीर्वाद रहे।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि ज्ञाता, मुक्तिवधू के विख्याता।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥
कोष्टबुद्धि को धार रहे, भक्तों को भी तार रहे।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥
बीजबुद्धि के भण्डारी, श्रद्धालु के हितकारी।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥
पदानुसारी मंत्र दिए, जिनशासन जयवंत किए।
वृषभनाथ श्रुतधामा ईश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(जोगीरासा)

सदा-सदा संभिन्नश्रोतृ से, हरें हमारी पीड़ा।
वो संग्राम महा सेनानी, हमको लगते हीरा॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
वृषभनाथ श्रुतधाम विराजे, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥
आप हमें संसार मोह से, सदा सुरक्षा देते।
आप स्वयंभू आप स्वयं ही, जिनवर दीक्षा लेते॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
वृषभनाथ श्रुतधाम विराजे, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥
जगत कष्ट पीडा हरने को, पूज्य महाव्रत धारे।
वृषभनाथ प्रत्येकबुद्ध जी, श्री ऋषिराज हमारे॥

सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
वृषभनाथ श्रुतधाम विराजे, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

देकर साथ थामकर उँगली, चलना हमें सिखाया।
बोधितबुद्ध निरंजन हैं वो, उनमें धर्म समाया॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
वृषभनाथ श्रुतधाम विराजे, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक देता जय को।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, उच्चासन दे आत्म निलय को।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के धारक योगी, योग धरो जग करो निरोगी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वी हो विज्ञानी, सबके भाग्य विधाता स्वामी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्त निखारे, सबकी नैया पार उतारे।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया जो धर लेते, हमको मोक्ष सवारी देते।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर नर संयमधारी, सबके भगवन अतिशयकारी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि धरो तुम स्वामी, हमें सिद्धि सुख दो आगामी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण जिनेश्वर राजा, हम सबके परमेश्वर बाबा।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलविहारी गगनविहारी, मोक्षमार्ग दो अतिशयकारी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के तुम धारी हो, दे सुख शांति संसारी को।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के हो भण्डारी, सिद्धांतों के आज्ञाकारी।
वृषभनाथ श्रुतधाम जिनंदा, कर नमोऽस्तु पाएँ आनंदा॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

उग्रतपों को धारकर, तार रहे संसार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों को धारकर, करो जगत श्रृंगार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों को धारकर, मोक्षनगर उजयार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों को धारकर, सबका करो सुधार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को धारकर, दूर करो संहार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को धारकर, घोर वेदना टार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

घोरपराक्रम धारकर, चित् चैतन्य निखार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारकर, सबको पार उतार।
वृषभनाथ श्रुतधाम को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(सखी)

आमर्ष-औषधी ऋद्धि, दे करो स्वयं की शुद्धि।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु खेल्ल-औषधी धारी, शाश्वत सुख के भण्डारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

प्रभु जल्ल-औषधी धारी, तुम रत्नों के व्यापारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

प्रभु विप्रुष-औषधि धारी, हो निज आहार विहारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

प्रभु सर्व-औषधी धारी, तुम तार रहे नर नारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

प्रभु सकल मनोबल धारी, बल साहस के दातारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

प्रभु वचन दोष हर्त्तारी, हो वचनबली उपकारी।
श्री वृषभनाथ श्रुतधामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

बाहुबली सा ध्यान लगाएँ, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

नीर-क्षीर का भेद सिखाएँ, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

चिदानंद घृत जैसा देते, सर्पिस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुर-मधुर सा रस झलकाएँ, मधुरस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष जैसी विषबेल नशाएँ, अमृतस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

दें अक्षीण-महानस-आलय, महा ऋद्धि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान सर्वोच्च सफल गुण, देते हो आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्ध शिला दें, सिद्धालय आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकारमय साधु जनों को, नमस्कार आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप आदि, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

वृषभनाथ श्रुतधाम के, करें जगत कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

वृषभनाथ भगवान् की, महिमा अपरम्पार।
धर्म प्रदाता नाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ग्रह परिग्रह के रोग को, नष्ट करें आदीश।
सो श्रुतधाम विधान कर, भक्त झुकाएँ शीश॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्त्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाये।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आये॥१॥
वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
ललितांग फिर वज्रजंघ फिर , भोग भूमि में आर्य प्रवर॥
फिर श्रीधर फिर सुविधी केशव, वज्रनाभि चक्रेश हुए।
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाए॥२॥
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थसिद्धि पाए।

तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय , वह अहमिन्द्र यहाँ आए॥
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाए।
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न आए॥३॥
हुए पंचकल्याणक फिर तो, भरत क्षेत्र में फैला धर्म।
जी हाँ ! ये वो वृषभनाथ जो, नगर अयोध्या धारे जन्म॥
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, बने वृषभसागर निर्ग्रंथ।
अक्षय तीजा दान तीर्थ दे, समवसरण शोभे अरिहंत ॥४॥
अष्टापद से मोक्ष पधारे, हम तो लाडू चढ़ा रहे।
आदिब्रह्म के बिंब बनाकर, मंदिर तीरथ सजा रहे॥
जी हां ऐसा ही तीरथ तो, बीना का श्रुतधाम रहा।
भारत देश मध्यप्रदेश में, सागर के नजदीक वसा ॥५॥
विशाल प्रतिमा वृषभनाथ की, मन को मोहित करती है।
जिन चरणों की तीर्थ वंदना, आतम शोधित करती है ॥
प्रतिमा का निर्माण हुआ तो, मिस्त्री सप्त व्यसन छोड़े।
प्रतिमा आई तो श्रद्धालु, खुशी.खुशी लेने दौड़े॥६॥
जिनको देख जैन खुश होते, यह तो है श्री जैन धरम।
लेकिन जैनेतर खुश होकर, धारण कर लें व्रत संयम॥
विद्यागुरु की महा कृपा से, तीर्थ बना श्रुतधाम महा।
पूज्य सरलसागर की छाया, मिली प्रतिष्ठा हुई यहाँ॥७॥
सुभाष मिठया जी पुण्यार्जन, करके बिम्ब विराज दिए।
दो हजार पंद्रह में गजरथ, आगम के अनुसार हुए॥
फिर मिठयाजी श्रुतसागर बन, मुनि पद पर आरूढ़ हुए।
और अनेकों साधक भी तो, व्रत संयम पर रूढ़ हुए ॥८॥

ऐसा यह श्रुतधाम हमारा, देवोंकृत अतिशयकारी।
जो श्रद्धा से यहाँ पधारें, उन सबका मंगलकारी॥
आगम का साम्राज्य देखकर, विस्मित हों मुख आकृतियाँ।
हस्तलिखित शास्त्रों की लिपियाँ, ताड़पत्र पांडुलिपियाँ॥९॥
आँखें फटी-फटी रह जातीं, रोम-रोम पुलकित होते।
यम-संयम धारण करने को, वैरागी से मन होते॥
त्यागी व्रतियों के आश्रम में, ज्ञान और वैराग्य दिखे।
सो आतम के हर साधक के, तन-मन आकर यहाँ टिके॥१०॥
समवसरण की प्यारी रचना, मुक्ताकाश निराली है।
चौबीसी के दर्शन करके, होती धर्म दिवाली है॥
महावीर की गंधकुटी तो, सचमुच! मोह मिटा देगी।
आज नहीं तो कल या परसों, सचमुच! मोक्ष दिला देगी॥११॥
जिनशासन का अद्‌भुत संगम, बीना का श्रुतधाम रहा।
जैन साधकों का यह तीरथ, आतम का कल्याण रहा॥
इसका सीधा सरल मार्ग है, सो श्रुतधाम पधारो रे।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' बन, नैया पार उतारो रे॥१२॥

(दोहा)

प्रथम प्रथम आराध्य हैं, वृषभनाथ श्रुतधाम।
सो नमोऽस्तु कर तीर्थ को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तीर्थक्षेत्र श्रुतधाम बीना स्थित श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलि...)

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो

नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः/(जः जः जः)।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

आरती

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
वृषभनाथ प्रभु पहले स्वामी, धर्मालु हो अंतर्यामी।
हम सबके बड़े बाबा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नयन सितारे।
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
नृत्य नाच देख वैरागे, अष्टापद से भव सुख त्यागे।
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
बीना के श्रुतधाम जिनंदा, वृषभनाथ दें परमानंदा ।
हम सब के उपकारी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
जो श्रुतधाम तीर्थ पर आएँ, वृषभनाथ सम गुण धन पाएँ।
आपद कष्ट नशाएँ, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुख शान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥

श्रुतधाम चालीसा

(दोहा)

अरिहंतों को कर नमन, सिद्धों का कर ध्यान।
आचार्यों की सन्निधि, उपाध्याय का ज्ञान॥
साधु जनों की वंदना, णमोकार का गान।
करने को उद्यत हुए, आकर के श्रुतधाम॥
वृषभनाथ के तीर्थ का, यह चालीसा पाठ।
कर नमोस्तु जो भी करें, बढ़ें उन्हीं के ठाट॥

(चौपाई)

जय श्रुत धाम तीर्थ के स्वामी, वृषभनाथ जी अंतर्यामी।
महा मनोहर अतिशयकारी, भक्त जनों को मंगलकारी॥1॥
वृषभनाथ की जिनवर मुद्रा, पद्मासन उत्तुंग जिनंदा।
श्रद्धालु की है कल्याणी, पुण्यात्माओं की वरदानी॥2॥
प्यारा है श्रुत धाम निराला, अद्वितीय संयम गुणमाला।
जिनशासन की अद्भुत छाया, जड़ चेतन की अतिशय माया॥3॥
जबसे जिनवर यहाँ विराजे, देवादेव बजाएँ बाजे।
जैन-अजैन झुकाएँ माथा, आओ हम भी गाएँ गाथा॥4॥
भारत देश हमारा प्यारा, मध्यप्रदेश राज्य सुखकारा।
सागर जिला नगरिया बीना, जहाँ तीर्थ श्रुतधाम नगीना॥5॥
अष्टापद जिसके उत्तर में, गोम्टेश्वर जिसके दक्षिण में।
पूरव में सम्मेद शिखरजी, पश्चिम में गिरनार गिरी जी॥6॥
बीना नगर हृदय के जैसा, धर्म पुण्य के संगम जैसा।
जहाँ जिनालय की न कमी थी, किंतु तीर्थ की यहाँ कमी थी॥7॥
सो भक्तों ने भाव बनाए, तीर्थ क्षेत्र के स्वप्न सजाए।

भैया जी संदीप साथ में, बनी योजना बात-बात में ॥8॥
एक बड़े उत्तुंग बिंब को, पधराना प्रभु वृषभ बिंब को।
पद्मासन की कर तैयारी, मकराना पहुँचे नर-नारी ॥9॥
बिंब हेतु पाषाण तलाशा, अतिशयकारी हो गई वर्षा।
ज्यों प्रारंभ हुई थी रचना, झूम उठी सारी संरचना ॥10॥
शिल्पकार जो बिंब तराशे, पहले सप्त व्यसन वो त्यागे।
अतः बिंब में अतिशय आया, बिंब पूर्णता का क्षण आया ॥11॥
सेठ कहे प्रभु लेट जाएंगे, भैया बोले बैठ जाएंगे।
ज्यों वाहन पर बिंब विराजे, वर्षा हुई मेघ भी गरजे ॥12॥
जैसे बिंब पूर्ण हो निकले, दर्शन को नर-नारी मचले।
एक गाँव की बात अनोखी, शक्ति समर्पण श्रद्धा चोखी ॥13॥
तीन बालिकाएँ तब आईं, दर्शन करना मुझको भाई।
भैया बोले यह ना होगा, प्रथम नियम कुछ लेना होगा ॥14॥
कन्याएँ बोलीं व्रत ले लेंगे, पर दर्शन बिन नहीं रहेंगे।
कन्याओं ने नियम संभाले, भगवन हो गए अतिशय वाले ॥15॥
गाँव-गाँव जब पहुँचे जिनवर, हुए महोत्सव जगह जगह पर।
ज्यों तीर्थंकर का वंदन हो, त्यों प्रतिमा का अभिनंदन हो ॥16॥
बुध आदि निर्वाण महोत्सव, दो हजार ग्यारह में उत्सव।
भगवन आए हुए विराजित, फूलों जैसे हुए सुसज्जित ॥17॥
जैसे हुए सुसज्जित भगवन, छह ऋतुओं के आए मौसम।
अद्भुत फल फूलों को देखा, अतिशय को बस माथा टेका ॥18॥
यह चर्चा सुन सब हर्षाए, यहाँ सरलसागर तब आए।
देख बिंब को बस था जाना, रुकने का ना कोई बहाना ॥19॥
पर जिनमुद्रा इतनी भायी, चातुर्मास हुआ सुखदायी।

अतिशय आकर्षण सम्मोहन, ज्यों श्रुतधाम विराजे भगवन ॥20॥
भक्तों के फिर मन मचलाए, यहाँ विदेशी देशी आए।
सो जीवंत हुआ श्रुतधामा, जय हो वृषभनाथ भगवाना ॥21॥
जिसका यह परिणाम हुआ रे, शीघ्र तीर्थ निर्माण हुआ रे।
राग-द्वेष भी मंद हुआ रे, जिनशासन जयवंत हुआ रे ॥22॥
पर्व पंचकल्याणक करना, अतः विविध विधान भी करना।
छह माहों तक भक्ति रचाई, मंत्र शक्ति अतिशय दिखलाई ॥23॥
तीन माह गंधोदक बरसा, फिर गजरथ में जन-जन हर्षा।
बने हजार इन्द्र-इन्दाणी, हुई प्रतिष्ठा जन कल्याणी ॥24॥
उत्सव बिना बोलियों वाला, शास्त्रों के अनुसार निराला।
मंत्र मिला प्रतिमा को जैसे, सो जीवंत हुए प्रभु वैसे ॥25॥
मंत्र सरलसागर जी देकर, खुश होते प्रभु मुद्रा लखकर।
फिर तो यांत्रिक गजरथ होते, दया अहिंसा सब दुख खोते ॥26॥
हुए विराजित ऐसे आदि, दूर करें जो आधि व्याधि।
हरें मानसिक रोग उपाधि, करवाते जो मरण समाधि ॥27॥
अरे! सुनो तो कहाँ ध्यान है, अनेकांत का यहाँ ज्ञान है।
ओ! भव्यातम सुन ले पगली, दाँतो तले दबेगी उँगली ॥28॥
देख यहाँ की माँ जिनवाणी, श्रद्धा भरने लगती पानी।
देख यहाँ की पावन माटी, सिर ऊँचा हो फूले छाती ॥29॥
हस्तलिखित हैं पांडुलिपियाँ, अद्भुत-अद्भुत आगम कृतियाँ।
देख जिनागम शास्त्र विशाला, शीघ्र खुलेगा सुख का ताला ॥30॥
ओ!भैया जी कहाँ चले हो, तुम तो प्यारे भले-भले हो।
रचना मुक्ताकाश निहारो, समवसरण से आत्म निखारो ॥31॥
चौबीसी की छटा निराली, गंधकुटी प्रभु वीर दिवाली।

वृषभनाथ से वीर जिनंदा, यहाँ बरसता परमानंदा ॥32॥
सो आकर ठहरो आश्रम में, तप करके रम लो आतम में।
यहाँ वहाँ ना भटको भैया, पकड़ो जल्दी तीर तिरैया ॥33॥
यह मानव पर्याय अनोखी, बिन समाधि के क्रिया न चोखी।
किंतु समाधि तब ही होगी, जहाँ साधना व्रत की होगी ॥34॥
जो साधक श्रुतधाम पधारे, हुए उन्हीं के बारे-न्यारे।
कितने साधक किए समाधि, कितने बन बैठे मुनि त्यागी ॥35॥
उनकी गणना कर न सकेंगे, किंतु भक्ति बिन हम न रुकेंगे।
सो श्रुतधाम हमें है प्यारा, ज्ञान ध्यान का संगम न्यारा ॥36॥
व्यसन रुकेंगे पाप मिटेंगे, यहाँ कर्म अभिशाप कटेंगे।
रोग शोक दुख कष्ट मिटेंगे, आदिनाथ जिनराज मिलेंगे ॥37॥
जिनकी चरण धूल सुखकारी, गंधोदक की है बलिहारी।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता, परमातम का तत्त्व प्रदाता ॥38॥
सो श्रुतधाम तीर्थ को ध्याना, बीना आना भूल न जाना।
मोक्षमहल की टिकट मिलेगी, 'विद्या' गुरु की रेल मिलेगी ॥39॥
'सुव्रत' हरी दिखाएँ झंडी, छोड़ो पापों की पगडंडी।
चालीसा का पाठ रचा लो, निज आतम श्रुतधाम बना लो ॥40॥

(सोरठा)

चालीसा का पाठ, जो करता है ध्यान से।
बनके जग सम्राट, मिलता प्रभु भगवान से॥
आकर के श्रुतधाम, वृषभनाथ भगवान को।
हो नमोस्तु धर ध्यान, अपना भी निर्वाण हो॥

===

नवीन निर्वाण काण्ड (दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदि-अनन्त, भरत बाहुबलि कर्म हनन्त।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१॥
वासुपूज्य चम्पापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥३॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥४॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।
साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥५॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥६॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागढ़ से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥७॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥८॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥९॥
नंग अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१०॥
रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥११॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१२॥

बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुंभकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१३॥
स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदी चेलना पूरव हद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१४॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१५॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१६॥
वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१७॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुए कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१८॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१९॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गए गुणावा पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२०॥
मथुरा से श्री जंबूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२१॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कंवल पहुँचे शिवद्वार।
सुप्रतिष्ठित गोपाचल पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२२॥
यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२३॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२४॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाए जग का उद्धार, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥२५॥

(दोहा) जो पाए निर्वाण सुख, सिद्ध अनन्तानन्त।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवंत॥

॥ इति ॥